अध्याय : 4

उपसंहार

अध्याय : 4

उ प सं हा र

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" से लेकर "वही बात" तक कमलेश्वरजी ने अनेक मंजिले पार की हैं। कमलेश्वरजी ने मूलतः कहानीकार होने के बावजूद भी एक अच्छे उपन्यासकार के रूप में उनकी ख्याति अर्जित की है। उनका व्यक्तित्व एक साधारण व्यक्ति का है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उनका स्थान महत्त्वपूर्ण है। वह एक अच्छे लेखक वक्ता और आदमी भी हैं।

कमलेश्वरजी का ज्ञान भांडार उनकी विशेषता है। बचपन से ही उन्होंने संत्रास का, एकाकीपन का, कुंठा का सामना किया है। कमलेश्वरजी का व्यक्तित्व बहुत बड़ा गतिशील है क्योंकि उनकी कथनी और करनी में एकात्मकता के दर्शन होते हैं। वक्त के वे पाबन्द हैं। बम्बई ने उनको "भारतीय कलाकार" बना दिया है। उनकी कहानियाँ आम आदमी की कहानियाँ हैं।

उनके उपन्यास में आम आदमी की जिन्दगी, रिश्ते, आस्थायें, नफरत, पति-पत्नी की कलह और प्रेम आदि सभी कुछ बातें चित्रित हुई हैं। जीवन के यथार्थ को उन्होंने बिलकुल सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। उनका जीवन के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण है।

कमलेश्वरजी ने युगबोध को सदैव प्राथमिकता दी है। वह सदैव ही अपने युग की किसी समस्या को सोचते रहते हैं। उनका चिन्तन बुध्दिजीवी का चिन्तन है, जो जनसाधारण के लिए ही है1 उनके कुछ वैसे भी उपन्यास हैं जिन पर सफल फिल्मे बन चुकी हैं। उनके अपने अधिकांश उपन्यासों में शहरी जीवन के निम्न-मध्यवर्ग का चित्रण मिलता है। कमलेश्वरजी ने सहजता और शैली को अपनाया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में छोटे कस्बों एवं बेढ शहरों की जिन्दगी का सही चित्रांकन किया है।

कमलेश्वरजी के उपन्यास में मध्यवर्गीय समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा वैयक्तिक जीवन से सम्बध्द है। एक सड़क सतावन गलियाँ, डाक बंगला, लौटे हुए मुसाफिर, तीसरा आदमी, समुद्र में खोया हुआ आदमी, आगामी अतीत, काली आँधी, वही बात और सुबह दोपहर शाम यह उपन्यास हैं।

जीवन के यथार्थ का चित्रण वे करते हैं। उनके उपन्यासों के सभी पात्र जिन्दा दिल बन पड़े हैं। उनकी भाषा बहुत ही प्रभावपूर्ण एवं स्वाभाविक बन पड़ी है। उनके सभी उपन्यास आकार में छोटे होने पर भी सफल है।

कमलेश्वजी एक जागरूक और सफल उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यासों में सूक्ष्म तथा जटिल भावों को प्रेरित किया जाता है। "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" के सरनाम और बंसिरी, "लौटे हुए मुसाफिर" के सतार, सलमा, बच्चन और नसीबन, "डाक बंगला" की इरा, विमल, बतरा और डाक्टर चन्द्रमोहर, "समुद्र में खोया हुआ आदमी" के श्यामलाल, हरबंस, बीरन, समीरा, रम्मी और तारा। "तीसरा आदमी" के मैं, चित्रा, और सुमन्त, "आगामी अतीत" के कमलबोस, चंदा और चाँदनी, "काली आँधी" के मालती, जग्गी बाबू, जगतसिंह, लिली, दिनानाथ, "वही बात" के समीर, प्रशान्त और नकुल, "सुबहर, दोपहर शाम" के शान्ता, प्रवीण, नवीन, मंजू आदि पात्रों को कमलेश्वरजी ने उपन्यासों में प्रेरणा दी है।

ये पात्र अपने अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व भी करनेवाले पात्र हैं। अपने पात्रों को पाठकों के सामने सजीव, रोचक एवं सुगठित बनाने का प्रयास करते हैं। उनके ये पात्र विशेष रूप से सामने आते हैं - इरा, सलमा, सतार, मैं, चित्रा, श्यामलाल, हरबंस, बीरन, कमलबोस, चांदनी, कमला, नसीबन, चंदा और मालती। पात्रों के चरित्र चित्रण स्वाभाविक ढंग से प्रभावपूर्ण रहे हैं। इनमें पाठकों के हृदय को उत्साहित किया जाता है। पाठक हृदय को औत्सुक्य और कौतुहल बढ़ाने का प्रयास उपन्यासों में किया है। डाक बंगला, तीसरा आदमी, एक सड़क सत्तावन गलियाँ, समुद्र में खोया हुआ आदमी, आगामी अतीत, वही बात, काली आँधी, सुबह दोपहर शाम। "डाक बंगला" में इरा "आगामी अतीत" में चांदनी के डायलाग , "काली आँधी" में मालती, "लौटे हुए मुसाफिर" में सतार, "समुद्र

मे खोया हुआ आदमी" में बीरन आदि के डायलॉग अविस्मरणीय रहे हैं।

"डाक बंगला" में इरा के माध्यम से नैतिक और सामाजिक मान्यताओं के बीच टकराहट दिखायी गयी है। "लौटे हुए मुसाफिर" में हिन्दुस्थान की आजादी और उनके विभाजन का वर्णन प्रभावी ढंग से चित्रित किया है।"समुद्र में खोया हुआ आदमी" में कमलेश्वरजी ने परिवार के टूट जाने की प्रक्रिया का अंकन किया है। "तीसरा आदमी" में पति-पत्नी के बीच जब कोई तीसरा आदमी आता है तो उनके रिश्ते बिगड़ते हैं। उसका चित्रण इस उपन्यास में है। "आगामी अतीत" में चांदनी नामक एक वेश्या के जीवन को उजागर करने का काफी प्रयास किया है। "काली आँधी" में स्वाधिनता के पश्चात् देश में व्याप्त राजनीति के आंतरिक पहलुओं को निर्ममता से उद्घाटित किया है। मालतीजी की राजनीति को विविध ढंग से चित्रित किया है। "समुद्र में खोया हुआ आदमी" में बीरन बड़ा समझदार और हमेशा चुप रहनेवाला है।

कमलेश्वरजी के उपन्यासों में नारी पात्र भी प्रमुख रही है - एक सड़क सतावन गलियाँ - बंसरी है, वह एक बाजारू औरत के रूप में सामने आती है। डाक बंगला में इरा एक साधारण नारी की नियति है और उसके आभ्यंतरिक एवं बाहय संघर्ष को रूपायित किया जाता है। तीसरा आदमी में चित्रा ही महत्त्वपूर्ण पात्र है। मैं चित्रा में सुमन्त का आना पति-पत्नी के बीच तीसरे आदमी का आना यह कहानी को कमलेश्वरजीने एक ऐसा सामाजिक और आर्थिक आयाम के साथ प्रदान किया है।

आगामी अतीत में चांदनी का महत्त्व कुछ और ही है। चांदनी इस उपन्यास में वेश्या के रूप में हमारे सामने प्रकट होती है। "लौटे हुए मुसाफिर" मे सलमा स्वभाव से सहज संघर्षशील है और विवाह की जंजीर उसे गुलाम बना देती है। "काली आँधी" में मालती उन्हें राजनीति में ही रूची थी। राजनीति से वह लड़ती दौडती है। "वही बात" में समीरा और प्रशान्त दोनो पति-पत्नी हैं। तो दोनों के बीच नकुल का आगमन। पति-पत्नी में बिखराव या टूटन। "सुबह, दोपहर और शाम" की शान्ता एक सहनशील, जिद्दी के रूप में उपन्यास में आ

जाती है।

कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी की दयनीय स्थिति एवं नारी की सहजता, प्रेम, उत्सुकता, कटुता का वर्णन इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। कमलेश्वरजी के उपन्यास महत्त्वपूर्ण रहे हैं। वे काफी सफल हुए हैं। उपन्यास के क्षेत्र में वे कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं।

कमलेश्वरजी के "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "डाक बंगला", "तीसरा आदमी", "लौटे हुए मुसाफिर", "आगामी अतीत", "समुद्र में खोया हुआ आदमी", "आगामी अतीत", "वही बात", "काली आँधी", "सुबह दोपहर शाम" यह उनके उपन्यास महन्वपूर्ण रहे हैं। उपन्यासों का वर्णन बहुत सहजता से कमलेश्वरजी ने किया है। उनके सभी उपन्यासों या कहानियों में उसका स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है।

कमलेश्वरजी के "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" से लेकर "सुबह दोपहर शाम" के ये नौ उपन्यास अपने आप में अत्यन्त मौलिक और रोचक महत्त्वपूर्ण बन पड़े हैं। उपन्यासकार के रूप में कमलेश्वरजी का स्थान प्रमुख रहा है।

कमलेश्वरजी की नारी पात्रों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इसप्रकार हैं-

1. कमलेश्वर के नारी पात्रों में उदारता, प्रेम, औदार्य ये सभी भावा मौजूद हैं।
2. नारी पात्र उपन्यास में रोचकता एवं कौतुहल पैदा करते हैं।
3. लेखक ने नारी पात्रों की जीवन संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया हे।
4. कमलेश्वरजी के नारी पात्र जिद्दी और संवेदनशील हैं।
5. कमलेश्वरजी के नारी पात्र साधारण नारी की नियति है।
6. नारी पात्र आभ्यंतरिक एवं बाहय संघर्ष को रूपायित करते है।
7. कमलेश्वरजी के नारी पात्र जीवन में आनेवाले हर सुखदुख का सामना करते ही रहती है।
8. कमलेश्वर के नारी पात्र स्वभाव से संघर्षशील हैं।
9. पाठक के मन में औत्सुक्य बढाने का प्रयास भी नारी पात्र करते हैं।